अध्याय - 4

राष्ट्रीय नेताओं और विभिन्न संस्थाओं, समितियों का हिन्दी के उत्थान, प्रचार-प्रसार, विकास में योगदान

राष्ट्रीय नेताओं और विभिन्न संस्थाओं, समितियों का हिन्दी के उत्थान, प्रचार-प्रसार विकास में योगदान

आज भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकार किया गया है । दूसरी ओर अपनी सहजता और सुबोधता के कारण भी हिन्दी का क्षेत्र व्यापक से व्यापकतर होता जा रहा है । भारत के अतिरिक्त मारिशस, फिजी, त्रिनिडाड, नेपाल, भूटान तथा गयाना आदि देशों में व्यावहारिक धरातल पर हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो रहा है । बंगलादेश, श्रीलंका, बर्मा इण्डोनेशिया, मलेयेशिया और कम्बोडिया आदि देशों में हिन्दी एक सांस्कृतिक, सामाजिक सम्बन्ध के रूप में व्यवहृत है । अमेरिका, सोवियत संघ, फ्रांस, जापान, चेकोस्लोवाकिया, बुलगेरिया, ब्रिटेन आदि विकसित देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन, अध्यापन हो रहा है । परन्तु स्वतन्त्रता से पहले स्वराष्ट्र, स्वदेश, राष्ट्रीय शिक्षा, विदेशी का बहिष्कार के साथ स्वभाषा का चुनाव भी एक जटिल समस्या थी । वैसे तो संविधान में हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किये जाने के पूर्व ही हिन्दी देश के कोने-कोने में व्यवहृत थी । सरल, सहज, सामान्य, उपयुक्त भाषा होने के कारण राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन के लक्ष्य व अभिप्राय को जन-सामान्य तक पहुँचाने और सर्वसाधारण= जनता को संगठित कर स्वतन्त्रता आंदोलन को सफल बनाने के लिए भी राष्ट्रीय नेताओं द्वारा हिन्दी ही अपनायी= जा रही थी । परन्तु हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने, उसे समृद्ध बनाने एवं उसे राजभाषा का गौरवपूर्ण स्थान दिलाने में विभिन्न धार्मिक, राष्ट्रीय, सामाजिक एवं स्वयंसेवी संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

हिन्दू धर्म में प्रचलित विविध रूढ़ियों, अन्ध-विश्वासों, कुरीतियों को दूर करने, ईसाई धर्म के प्रचार को रोकने, जनता में स्वभाषा, स्वदेश, स्वधर्म जगाने तथा सामाजिक सुधार के लिए विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं द्वारा आंदोलन किए गए । बिहार में भूदेव मुखर्जी, बंगाल में राजा राममोहन रॉय, केशवचन्द्र सेन, बंकिम चन्द्र, अरविन्द घोष, महाराष्ट्र में बाबूराम विष्णु पराडकर, माधवराव सप्रे, पंजाब में लाला लाजपतराय, लाला हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, राजस्थान में लज्जाराम मेहता, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, गुजरात में स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी तथा हिन्दी भाषी क्षेत्रों में पुरूषोत्तमदास टंडन, सेठ गोविन्द दास ने इन सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं हिन्दी सेवी संस्थाओं के माध्यम से आंदोलन किए और इन आंदोलनों में हिन्दी को प्रमुख स्थान दिया ।

इस प्रकार जहां सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक आंदोलनों को सफल बनाने में हिन्दी का प्रयोग हुआ वहीं इन आंदोलनों के लिए स्थापित विभिन्न संस्थाओं द्वारा हिन्दी के प्रयोग एवं हिन्दी के पक्ष में एक उत्साहमय आत्मीय वातावरण के निर्माण से हिन्दी के उत्थान, प्रचार-प्रसार, विकास को गति मिली तथा वह अधिक सशक्त, सम्पन्न और समृद्ध हुई । हिन्दी की इन्हीं विशेषताओं को देखते हुए इन संस्थाओं के नेताओं, समाज-सुधारकों, राष्ट्रीय चिंतकों ने हिन्दी को राजभाषा और देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि बनाने पर बल दिया, जिसके फलस्वरूप देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को राजभाषा की संवैधानिक मान्यता प्रदान की गई ।

क. राष्ट्रीय नेता और हिन्दी

1. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

"स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, उसे मैं प्राप्त करके ही रहूँगा" का नारा देनेवाले उग्रवादी नेता लोकमान्य तिलक उन जन-नायकों में से एक थे, जिन्होंने विदेशी सत्ता एवं शासन के विरूद्ध झण्डा उठाया । वे स्वदेशीपन के सशक्त समर्थक थे और राष्ट्र के लोगों को एक-दूसरे के निकट लाने के लिए समान भाषा चाहते थे । उनकी दृढ़ आस्था थी कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा बनने में समर्थ है और राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने में सक्षम है । अपने साप्ताहिक पत्रों "केसरी" (मराठी) और "मराठा" (अंग्रेजी) के साथ उन्होंने सन् 1903 में "हिन्दी केसरी" नामक हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया और राष्ट्रभाषा हिन्दी के आन्दोलन को सशक्त बनाने में अपना योगदान दिया । उन्होंने महाराष्ट्र में हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि की मान्यता दिलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया ।

2. लाला लाजपतराय

"पंजाब केसरी" के नाम से सुप्रसिद्ध लाला लाजपतराय उन समर्थ क्रान्तिकारी नेताओं में से थे, जिन्होंने हिन्दी को उसका राष्ट्रीय रूप दिलाने में जीवन-पर्यंत लड़ाई लड़ी । वे एक महान देशभक्त, शिक्षा-शास्त्री और ओजस्वी वक्ता थे । वे मानवप्रेमी, स्वदेश प्रेमी, प्रभावशाली पत्रकार एवं आर्य समाज के कट्टर अनुयायी थे । कट्टर आर्य समाजी होने के कारण वे हिन्दू हितों के संरक्षक थे । उन्होंने पंजाब में हिन्दी प्रचार एवं प्रसार का कार्य एक संस्था के रूप में किया । उन्हीं के प्रयत्नों से पंजाब के शिक्षा क्षेत्र में हिन्दी को स्थान मिला । उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थानों की स्थापना की, जिनमें हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य बनाया । उन्हीं की प्रेरणा से पंजाब विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में हिन्दी को स्थान मिला और विश्वविद्यालय में हिन्दी की "रत्न", "भूषण" और "प्रभाकर" परीक्षाओं का आरम्भ हुआ, जिसके कारण पंजाब में हिन्दी के लिए बड़ा अनुकूल वातावरण बना ।

3. महात्मा गांधी

महात्मा गांधी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न महापुरूष थे । वे समाज सुधारक, कुशल राजनीतिज्ञ, महान संगठनकारी, दूरदर्शी एवं लोकप्रिय नेता थे । वे हिन्दी की व्यापकता, उपयोगिता एवं शक्ति से परिचित थे ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने देश की स्वतन्त्रता के अभियान में हिन्दी के प्रयोग की व्यावहारिक आवश्यकता को समझा, परखा और अपनाया । उन्होंने काँग्रेस के राजकाज में भी

हिन्दी का प्रयोग आरंभ करवाया । उन्होंने विभिन्न सभा-संस्थाओं की स्थापना की और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के राष्ट्रीय-कार्य को बल दिया ।

भड़ौच में "गुजरात शिक्षा परिषद" के अधिवेशन के सभापति पद से गांधीजी ने भारत की राजभाषा के स्वरूप तथा व्यवहार-क्षेत्र के 5 आवश्यक गुण बताये -

1. वह भाषा अमलदारों (सरकारी कर्मचारियों) के लिए आसान होनी चाहिए ।
2. उस भाषा के द्वारा भारत का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक काम-काज सम्भव होना चाहिए ।
3. उस भाषा को भारतवर्ष के ज्यादातर लोग बोलते हों ।
4. वह भाषा राष्ट्र के हित के लिए आसान होनी चाहिए ।
5. उस भाषा का विचार करते समय क्षणिक भी अल्प स्थायी स्थिति पर जोर न दिया जाए ।

उन्होंने यह भी कहा कि -

"हिन्दी ही हिन्दुस्तान के शिक्षित समुदाय की सामान्य भाषा हो सकती है यह बात निर्विवाद है । यह कैसे हो ? केवल यही विचार करना है। जिस स्थान को अंग्रेजी भाषा आजकल लेने का प्रयत्न कर रही है और जिसे लेना उसके लिए असम्भव है, वही स्थान हिन्दी को मिलना चाहिए क्योंकि हिन्दी का उस पर पूर्ण अधिकार है ।"

गांधीजी के निरन्तर प्रयासों, प्रयत्नों व प्रेरणा के फलस्वरूप ही सम्पूर्ण देश में हिन्दी के पक्ष में एक उत्साहमय आत्मीय वातावरण का निर्माण हुआ ।

4. पंडित मदनमोहन मालवीय

मालवीयजी का राष्ट्रीय जीवन एक पत्रकार के रूप में प्रारम्भ हुआ । उनके सभी राष्ट्रीय कार्यकलापों में हिन्दी प्रचार, प्रसार एवं विकास का कार्य प्रमुख रहा । एक ओर उन्होंने उत्तरप्रदेश में हिन्दी को अदालतों एवं दफ्तरों में प्रवेश करवाया तो दूसरी ओर सरकार के देवनागरी लिपि की जगह रोमन लिपि के प्रस्ताव का घोर विरोध किया । उन्होंने विभिन्न प्रान्तों से जनमत संगठित कर तत्कालीन गर्वनर को साठ हजार हस्ताक्षरों वाला आवेदन-पत्र देकर रोमन लिपि के खिलाफ जनाक्रोश एवं जनभाषा से सत्ता को परिचित करवाया, जिसके फलस्वरूप नागरी लिपि को सरकारी काम-काज में स्थान दिया गया ।

उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा, काशी तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी समाजसेवी एवं साहित्य सेवी संस्थाओं का गठन किया तथा इनके माध्यम से हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का मार्ग प्रशस्त किया । इन्हीं संस्थाओं ने आगे चलकर अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं विकास में सहयोग प्रदान किया । उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की सन् 1917 में स्थापना की और इस संस्था में प्रत्येक विद्यार्थी के लिए हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य किया ।

उन्होंने "मर्यादा", "अभ्युदय", "लीडर", "सनातन-धर्म" जैसी पत्र-पत्रिकाओं का प्रारम्भ, प्रकाशन एवं सम्पादन कर देश की सेवा की ।

5. राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कर्णधार तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रेरणा-स्त्रोत थे । वे मदनमोहन मालवीयजी के सच्चे उत्तराधिकारी थे और उन्हीं की तरह हिन्दी और नागरी लिपि के प्रबल समर्थक थे । उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना और उसके उद्देश्यों को कार्यान्वित करने में अपना समस्त जीवन लगा दिया ।

6. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

भारतीय गणतन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एक निष्ठावान देशभक्त थे । उन्होंने राजनीतिक कार्यों में ही नहीं, बल्कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में भी अपना विशेष योगदान दिया ।

सर्वप्रथम कलकत्ता में स्थापित बिहारियों की एक छोटी-सी साहित्यिक संस्था "हिन्दी भाषा परिषद" से और फिर दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा और विविध हिन्दी सम्मेलनों के सभापति पद से वे निरन्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य करते रहे ।

भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में भारतीय संविधान में हिन्दी को उचित स्थान दिलाकर उन्होंने हिन्दी के प्रति अपना सबसे बड़ा योगदान दिया । उन्होंने भारतीय संविधान के हिन्दी रूपान्तर तैयार करवाने और संविधान में स्वीकृत सभी भारतीय भाषाओं में पारिभाषित कोश तैयार करवाने का महत्वपूर्ण कार्य किया ।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति के पद से उन्होंने सरकारी समारोहों के निमन्त्रण-पत्र, राष्ट्रीय मौकों पर भाषण, राष्ट्र के नाम संदेश, राष्ट्रपति भवन से जारी सूचनाओं एवं परिपत्रों में हिन्दी को उचित स्थान दिलाया । इस प्रकार उन्होंने एक तरफ हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिलवाया तो दूसरी तरफ उसका व्यापक प्रचार भी किया ।

7. काका साहब कालेलकर

राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य को गति प्रदान करने में अहिन्दी भाषी नेताओं में काका कालेलकर का नाम प्रमुख है । गांधीजी की प्रेरणा से उन्होंने हिन्दी सीखी और उसका प्रचार किया । उन्होंने दक्षिण भारत तथा गुजरात में हिन्दी का प्रचार किया ।

8. सेठ गोविन्द दास

सेठ गोविन्द दास हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, राजनेता तथा प्रखर नेता थे । उन्होंने अपने युवाकाल में ही कई हिन्दी पत्रिकाएं प्रारम्भ कीं और हिन्दी के प्रति अपने अगाध प्रेम का परिचय दिया ।

उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेल के अध्यक्ष पद से हिन्दी को राजभाषा का गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिए अथक प्रयास किया और भारतीय लोकसभा के सदस्य के रूप में हिन्दी के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया । इसके अतिरिक्त उन्होंने "शारदा", "लोकमत", तथा "जयहिंद" आदि पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कर भी हिन्दी की सेवा की ।

ख. धार्मिक और सामाजिक संस्थाएं और हिन्दी

1. ब्रम्ह समाज

राजा राममोहन राय ने पाश्चात्य धर्म प्रचारकों द्वारा ईसाई धर्म के प्रचार से भारतीयों के मन में यूरोपीय धर्म एवं सभ्यता के प्रति होनेवाले मोहक आकर्षण को रोकने के उद्देश्य से सन् 1828 में ब्रम्ह समाज की स्थापना की । यह एक धार्मिक और सामाजिक संस्था थी और इसका उद्देश्य था हिन्दुओं में जागरण लाना, सामाजिक समानता लाना और महिला जगत् का उद्धार करना ।

उन्होंने जनता में राष्ट्रीय चेतना को गतिशील किया एवं राष्ट्र के लिए एक राष्ट्रभाषा होने पर बल देते हुए हिन्दी को इस पद के लिए सर्वथा उपयुक्त एवं सक्षम माना । अपने विचारों के प्रचार के लिए उन्होंने अधिकांश पुस्तकें हिन्दी में ही प्रकाशित कीं और "बंगदूत" नामक अपने साप्ताहिक पत्र में कुछ पृष्ठ हिन्दी के भी रखे । इससे हिन्दी प्रचार के कार्य को भी गति मिली ।

2. **आर्य समाज**

ईसाई धर्म के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने, हिन्दी समाज तथा धर्म में प्रचलित विविध रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं कुरीतियों को दूर करने तथा स्वभाषा, स्वदेश, स्वधर्म जगाने के लिए महर्षि दयानंद सरस्वती ने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की ।

उन्होंने अपने विचारों को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए अपने प्रचारकों और अनुयायियों के लिए हिन्दी की शिक्षा और प्रयोग के नियमों को अनिवार्यता प्रदान की और हिन्दी पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, हिन्दी सम्मेलन का आयोजन, धार्मिक परीक्षाओं का हिन्दी में संचालन कर तथा अपने भाषणों, सिद्धांतों के खण्डन-मण्डन, ग्रन्थ लेखन, प्रचार साहित्य में हिन्दी का प्रयोग कर हिन्दी के विकास, उत्थान एवं प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दिया ।

आर्य समाज ने दक्षिण अफ्रीका, केनिया, उगांडा, मारिशस, फिजी, डच, गयाना आदि देशों की भारतीय बस्तियों में आर्य समाज की स्थापना और हिन्दी शिक्षण संस्थाओं का संचालन कर देश में ही नहीं, बल्कि विदेश में भी हिन्दी का प्रचार किया ।

3. **प्रार्थना समाज**

हिन्दू धर्म में आमूल सुधार, अछूत जाति-पाति का विरोध, स्त्री-शिक्षा और विधवा विवाह आदि के प्रचार कार्य के लिए महादेव गोविन्द रानडे ने महाराष्ट्र में सन् 1867 में प्रार्थना समाज की स्थापना की । इस संस्था ने महाराष्ट्र और उसके आसपास के प्रदेशों में अनेक सुधारात्मक कार्य किए । इस समाज का सबसे अधिक प्रभाव शिक्षित वर्ग पर पड़ा । इस संस्था के प्रयासों से आधुनिक शिक्षा और जनता में राष्ट्रीय चेतना का प्रचार हुआ । इस संस्था द्वारा हिन्दी को दिए गए प्रोत्साहन से हिन्दी का प्रयोग भी बढ़ा ।

4. **थियोसोफिकल सोसाइटी**

भारतीय धर्म-दर्शन और विचारधाराओं से प्रभावित होकर उसके अध्ययन और प्रसारण के लिए मदाम ब्लावत्स्की तथा कर्नल आलकोट ने सन् 1875 में अमेरिका में थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना की । इस सोसाइटी ने बम्बई और बनारस में राष्ट्रीय कार्यालय तथा मद्रास में अन्तर्राष्ट्रीय कार्यालय स्थापित किए ।

इस सोसाइटी ने अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की, जिनमें धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ भारतीयता, भारतीय संस्कृति और भारतीय भाषाओं पर बल दिया । सोसाइटी ने अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिए अपने साहि साहित्य का प्रकाशन अंग्रेजी के साथ हिन्दी में भी किया इससे हिन्दी को पनपने का अवसर मिला और हिन्दी का प्रचार हुआ ।

सोसाइटी के द्वाा हिन्दी सेवा मुख्यतः श्रीमती एनी बेसेंट ने की, जिनकी भारतीय संस्कृति, दर्शन और चिंतन के प्रति बड़ी आस्था थी । वे राष्ट्रभाषा को राष्ट्रनिर्माण का अंग मानती थीं और राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की समर्थक थीं । उन्होंने सोसाइटी के द्वारा हिन्दी की बहुत सेवा की । उन्होंने अपने अंग्रेजी पत्र "न्यू इंडिया" में भी हिन्दी लेखों के प्रकाशन को स्थान दिया ।

ग. साहित्यिक संस्थाएं और हिन्दी

1. काशी नागरी प्रचारिणी सभा

राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि नागरी के प्रचार-प्रसार के राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए हिन्दी की सर्वप्रथम संस्था नागरी प्रचारिणी सभा की सन् 1893 में वाराणसी में स्थापना हुई । इस संस्था को गोपाल प्रसाद खत्री, रामनारायण मिश्र, बाबू श्यामसुंदर दास, पंडित मदनमोहन मालवीय, अम्बिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, श्रीधर पाठक और बदरीनारायण चौधरी आदि का समर्थन एवं संरक्षण प्राप्त था ।

इस संस्था ने हिन्दी के विकास के लिए ठोस तथा रचनात्मक कार्य किए । हिन्दी की प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों की खोजकर उनका प्रकाशन, हिन्दी के बृहद कोशों का निर्माण, हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास लेखन, साहित्य गोष्ठियों का आयोजन और अन्य शोधकार्य इस संस्था के मुख्य कार्य रहे । इस सभा ने साहित्य की विविध विद्याओं पर महत्वपूर्ण ग्रन्थ भी प्रकाशित किए, जिनसे हिन्दी साहित्य भण्डार संपुष्ट हुआ । इस संस्था की हिन्दी साहित्य की की मौलिक और उत्तम रचनाओं पर पुरस्कार और पदक देने की योजना द्वारा हिन्दी साहित्य सृजन को बढ़ावा मिला ।

2. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के सूत्रधार राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन थे । हिन्दी

हिन्दी साहित्य के सब अंगों की पुष्टि तथा उन्नति के लिए प्रयत्न करना, राष्ट्रलिपि देवनागरी और राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार करना, नागरी लिपि को मुद्रण तथा लेखन की दृष्टि से अधिक विकसित करना, हिन्दी भाषी राज्यों के सरकारी विभागों, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा

अदालतों में हिन्दी भाषा के प्रयोग का प्रचार करना, हिन्दी के विद्वानों तथा लेखकों को सम्मानित करना तथा पारितोषिक, पुरस्कार, पदक तथा उपाधि आदि से उन्हें विभूषित करना, हिन्दी भाषा द्वारा उच्च परीक्षाएं लेना आदि इस सम्मेलन के प्रमुख कार्य रहे, जिससे हिन्दी भाषा और साहित्य की अभिवृद्धि हुई और हिन्दी के व्यापक प्रचार व प्रसार को गति मिली ।

3. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार द्वारा भारतीय एकता को मजबूत बनाने, प्रान्तीय भाषा के सहयोग से हिन्दी भाषा का विकास करने तथा दक्षिण भारत में हिन्दी का अनुकूल वातावरण बनाने के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की गई ।

इस सभा ने हिन्दी शिक्षण में सहायक अनेकानेक पुस्तकें प्रकाशित कीं । हिन्दी के व्यापक प्रचार के लिए दक्षिण भारत के प्रमुख केन्द्रों में हिन्दी महाविद्यालय और हिन्दी प्रचारक विद्यालय खोले । इस सभा द्वारा संचालित विभिन्न हिन्दी परीक्षाओं द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का ठोस कार्य हुआ ।

4. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन की प्रेरणा से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की वर्धा में सन् 1936 में स्थापना हुई । इस समिति को महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सेठ जमनालाल बजाज, माखनलाल चतुर्वेदी, पुरुषोत्तमदास टंडन, आचार्य नरेन्द्र देव का संरक्षण और नेतृत्व प्रदान था ।

अखिल भारतीय स्तर पर दक्षिणेतर अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना और उसके उसके माध्यम से भावनात्मक एकता पुष्ट करना इस समिति का मूल उद्देश्य था । इसके अतिरिक्त राष्ट्रभाषा की परीक्षाएं चलाना, राष्ट्रभाषा की शिक्षा का प्रबन्ध करना, पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करना, उपयोगी साहित्य निर्मित करना, राष्ट्रभाषा हिन्दी की समुचित शिक्षा के लिए देवनागरी में लिखी जानेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार - प्रसार एवं विकास करना, सारे देश में तथा आवश्यकतानुसार विदेश में भी हिन्दी के प्रति अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना और हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि के लिए उपयोगी मौलिक पुस्तकें लिखवाना तथा अन्य भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य का हिन्दी में अनुवाद करना तथा उन्हें प्रकाशित करना समिति के कार्य रहे । इस प्रकार समिति का प्रत्येक कार्य हिन्दी सेवा से ओत - प्रोत रहा ।

हिन्दी के उत्थान, प्रचार-प्रसार एवं विकास को गति देनेवाले
नेता, राष्ट्रीय चिन्तक और समाज-सुधारक

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

लाला लाजपतराय

महात्मा गांधी

पंडित मदनमोहन मालवीय

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

राजा रामगोहन राय

महर्षि. दयानन्द सरस्वती

डॉ. एनी बेसेंट

अरविंद घोष

महात्मा ज्योतिबा फूले